नव वर्ष

(January 01, 2004)

जन्म के रंग में, जीवन की उमंग है,
मृत्यु की अनिश्चित्ता से भंग, जीवन की तरंग है।
यह कैसा आश्चर्य, यह कैसा धोखा है,
जन्म लेते ही तो मृत्यु का उदय हो जाता है।
नव वर्ष की इस छटा में मन, द्वन्द्वों से पार जाने के लिए करहा जाता है।

धूप की सुचियों से मन को एक आघात है,
छाँव की शीतलता में सबके मन को राहत है।
यह कैसा आश्चर्य, यह कैसा है विचार,
धूप की परछांई भी तो है छाँव की शीतलता का शिकार।
नव वर्ष की किरणों पर सवार, आओ चलें द्वन्द्वों के पार।

अँधकार के भय से यह मन अत्यंत व्याकुल है,
प्रकाश की चकाचौंध देखने के लिए यह सदैव आतुर है।
यह कैसा आश्चर्य, यह कैसी बेईमानी है,
प्रकाश के अभाव में ही तो अँधकार की राजधानी है।
नव वर्ष की ऊर्जा से अपनी मशाल जलानी है।

पतझड़ बसंत के बीच सदा सदा की है जंग,
देख सुख दुःख का यह अटूट संग, मन है अत्यंत दंग।

फिर भी दिल में है एक तरंग,
नया है साल, नई है खुशी, नई है उमंग।

- मोहरहित